P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सुस्थिर विकास में विद्यालयों की भूमिका

विचारी लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
मानित विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

सारांश

जिस विकास को आधार बनाकर पर्यावरण के साथ घोर अन्याय एवं अत्याचार किया जा रहा है। जिससे विभिन्न पर्यावरणीय व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं। प्रकृति मानव के इन क्रिया कलापों को लम्बे समय तक बर्दाशत नहीं कर सकती है, क्योंकि उसकी भी एक सहन सीमा होती है। प्रकृति की सहनशीलता का बाँध जब टूटता है तो वह अपने ऊपर अत्याचार करने वाले को दण्डित करने लगती है। मानव अपनी इच्छाओं, निजस्वार्थो एवं आर्थिक सम्पन्नता के लिए अत्यधिक उत्पादन एवं जरूरत से ज्यादा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन प्रारम्भ कर देता है। जिससे कि स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण दूषित हो जाता है।

पारिस्थितिक तन्त्र के सन्तुलन को बनाएँ रखने के लिए मानव को प्राकृतिक संसाधनों एवं मानवीय संसाधनों का समुचित एवं सुनियोजित उपयोग करना चाहिए ताकि पारिस्थितिक विकास के ठोस आधार को निर्मित किया जा सके। सुस्थिर विकास को बनाये रखने के लिए हमें सामाजिक–आर्थिक तथा राजनैतिक तथ्यों में समुच्चय स्थापित करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त जनसंख्या के संसाधनों पर दबाव को सीमित करना, इसकी प्राथमिक आवश्यकता है। इस प्रकार सुस्थिर विकास से तात्पर्य है कि विकास इस प्रकार होना चाहिए कि जो मानव जीवन की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए भी ठोस आधार प्रस्तुत करें। और यह तभी संभव है जब विद्यालय अपने दायित्व का पूर्ण निर्वहन करें।

मुख्य शब्द : सुस्थिर विकास, सतत् विकास, पारिस्थितिक तन्त्र, पर्यावरण, मानवीय संसाधन, भौतिक संसाधन।

प्रस्तावना

सतत् विकास एक प्रकार से समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था का संतुलित एकीकरण हैं। सतत् विकास इस तरह से होता है कि यह व्यापक संभावित क्षेत्रों, देशों और यहाँ तक की आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो हमे निर्णय करते समय समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर उसके संभावित प्रभावों का विचार कर लेना चाहिए कि हमारे निर्णय एवं कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा हमारे कार्यों का भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता हैं। आर्थिक और औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहिए जिससे पर्यावरण को कोई भी ऐसी क्षति न हो जिसकी भरपाई न की जा सके।

संक्षेप में सतत् विकास ऐसा विकास है जो आने वाली पीढ़ियों के हितो से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता हैं।

यह परिभाषा दो महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर करती है– पहली, प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिए जरुरी हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के जीविकोपार्जन के लिए भी उतनी ही आवश्यक हैं। दूसरी, वर्तमान में किसी भी प्रकार के विकास–संबन्धी कार्यों को करते समय उसके भविष्य में आने वाले परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक हैं। संक्षेप में इस परिभाषा में 'आवश्यकता' और 'भावी पीढ़ियाँ' दो महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सुस्थिर विकास के लिए छात्रों में जन सहयोग की भावना विकसित करना है।
2. प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का सुनियोजित उपयोग के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
3. पर्यावरण के अनुकूल मानवीय गतिविधियों के लिए छात्रो को प्रेरित करना।
4. नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग के लिए छात्रो को प्रेरित करना।
5. जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
6. प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के संरक्षण के लिए छात्रों को प्रेरित करना।

7. रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक एवं ऑर्गेनिक उत्पादों के प्रयोग के लिये छात्रों को प्रेरित करना।

सतत् विकास की संकल्पना

सतत् विकास की संकल्पना का वास्तविक विकास 1987 में ''हमारा साझा भविष्य'' (Our Common Future) नामक रिपोर्ट, जिसे 'द ब्रंटलैंड रिपोर्ट' के नाम से भी जाना जाता है। इसके आने के बाद हुआ एवं तभी से इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा गठित आयोग ने विकास के लिए परिवर्तन हेतु वैश्विक प्रारुप का प्रस्ताव पेश किया। ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने हमारे रहन, सहन एवं शासन में पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया। मानवता के लक्ष्यों एवं आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए पुरानी समस्याओं पर नए तरीके से विचार करने तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय पर बल दिया। इस आयोग का औपचारिक नाम 'पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग' था। इसने मानव पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के क्षय एवं खराब होती स्थिति तथा सामाजिक आर्थिक विकास के लिए उस क्षय के परिणाम की और ध्यान आकृष्ट किया था। आयोग की स्थापना करते समय संयुक्त राष्ट्र महासभा ने विशिष्ट रूप से दो विचारों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था।

1. पर्यावरण, अर्थव्यवस्था तथा लोगों की भलाई अत्यधिक अन्तर्संबन्धित है।
2. सतत् विकास के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग आवश्यक है।

सतत् विकास की संकल्पना के अंतर्गत यह माना जाता है कि अकेले आर्थिक समृद्धि पर्याप्त नहीं है किसी कार्य के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय आयाम अन्तर्संबन्धित होते हैं। एक समय में इन तीनों में से केवल एक पर विचार करने से निर्णय में त्रुटि हो सकती है। तथा टिकाउ परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है केवल लाभ पर ध्यान केन्द्रित करने से सामाजिक एवं पर्यावरणीय हानि होती है। जो दीर्घकाल में समाज को नुकसान पहुँचाती है।

सतत् विकास के उद्देश्य

सतत् विकास के अर्थ और अवधारणा से इतना तो स्पष्ट ही हो गया है कि सतत् विकास मानव के अस्तित्व की बुनियादी शर्त है। मानव पृथ्वी पर तभी तक हैं जब तक अन्य पशु–पक्षी और पेड़–पौधे हैं। स्वतंत्र रूप से हमारा पृथ्वी पर कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए सतत् विकास के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए–

1. गरीबी निवारण एवं सतत् आजीविका।
2. पर्यावरण अनुकूल मानवीय गतिविधियाँ।
3. ऊर्जा दक्षता।
4. प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों का संरक्षण।
5. नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता।

सुस्थिर विकास में विद्यालयों की भूमिका

21वीं सदी की सबसे महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक गतिविधि, एक ऐसे वैश्विक समाज का निर्माण करना है जो उसे सहारा देने वाली पर्यावरणीय व्यवस्थाओं के साथ पारस्परिक सामंजस्य के साथ टिकाऊ रूप से रह सके। सभी शैक्षणिक संस्थाओं विशेष रूप से विद्यालयों द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, पर्यावरणीय शिक्षा को एक पथप्रदर्शक के रूप में वृहद पैमाने पर मान्यता प्रदान करनी होगी। यह अनुभाग उन कार्यों से संदर्भित है, जिन्हें अपनाकर विद्यालय सुस्थिर भविष्य के लिए शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इन कार्यों के अन्तर्गत वे गतिविधियाँ आती हैं, जिन्हें अपनाकर विद्यालय वर्तमान पर्यावरण अथवा पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने की दिशा में कार्य कर सकते हैं। इसमें विभिन्न गतिविधियाँ जैसे– विद्यालय को स्वच्छ रखने सम्बन्धित अभियान, ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन हेतु जन–सहभागिता आदि निहित हैं। साथ ही विद्यालय निम्न प्रकार के कार्यों में भी भाग ले सकते हैं–

1. औपचारिक पाठ्यक्रम प्रारूप के अन्तर्गत यह पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधियों के रूप में अपनाया जा सकता है।
2. पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए बच्चे विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, जैसे– विद्यालय में वाटिका बनाना, प्लास्टिक के थैलों का पुनः इस्तेमान करना, जब आवश्यकता नहीं तो तब पंखों और रोशनी देने वाले उपकरणों को बन्द कर देना इत्यादि को पहले से ही अपना रहे होते हैं। पर्यावरण शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य पर्यावरण में सुधार, उसके क्षरण को रोकना और उसके हितों को सहेजने से सम्बन्धित गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।
3. यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि हम जो कुछ भी कर सकते हैं। उसे हमारे आस–पास के पर्यावण पर क्या प्रभाव पड़ता है। और साथ ही इसका वैश्विक पर्यावरण से क्या सम्बन्ध है।

विद्यालयी पहल

'विद्यालयी पहल' इसका एक माध्यम हो सकता है। इसके द्वारा विद्यालयों में मात्र कक्षा तक सीमित अध्ययन को और अधिक विस्तारित किया जा सकता है। तथा छात्रों में उनके पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार और बचनबद्धता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किये जा सकते हैं–

1. छात्रों की युवा शक्ति को सकारात्मक दिशा देने तथा वास्तविक जीवन के मुद्दों को हल करने की अन्तः प्रेरणा को बढ़ाने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।
2. छात्रों को विश्व की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित औचित्यपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्रदान कराने में मदद् कर सकती है।
3. छात्रों को उनके पाठ्यक्रम से जुड़े रहने के साथ उनको सम्बन्धित पाठ्यक्रम के अन्तर्विषयक सम्बन्धों को खोजने और समझने में सहायता करती है।
4. प्रत्येक छात्र को उसकी सामर्थ्य के अनुसार विकास को पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।
5. छात्रों में आत्मविश्वास और जिम्मेदारियों को विकसित करने तथा योजनाओं के महत्त्व और निष्पादन को समझने में मदद् करती है।

6. ये छात्रों को मुद्दों के विभिन्न पहलुओं को भली–भाँति समझने तथा उनके द्वारा पर्यावरण और समाज के मध्य सकारात्मक अन्तर को समझने में मदद् करती है।
7. छात्रों के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों को समझने वाले और जागरुक समाज का निर्माण करने में मदद् कर सकती है।
8. पहल को विद्यालयी पाठ्यक्रम में समाहित होना चाहिए जो प्रभावी शिक्षण में सहायक हो सके।
9. अध्यापक, छात्र, गैर शिक्षण कर्मचारी तथा बच्चों के माता–पिता को इसमें सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
10. विद्यालयी पहल में विद्यालय के आस–पास के समुदाय, सरकारी, गैर सरकारी संगठनों या उनके प्रतिनिधियों को जनसहभागिता के रूप में सम्मिलित करना चाहिए।
11. इसे विद्यालयों और आस–पास के समुदायों को उनकी जीवनचर्या और प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए।

विद्यालयों को लाभ

विद्यालयों को इन पहलों पर कार्य करना काफी लाभकारी होता है। इससे निम्न अवसर प्राप्त होते हैं–

1. पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पठन–पाठन के प्रमुख क्षेत्रों में पर्यावरणीय प्रयोग कर सकते हैं।
2. विद्यालय के संसाधनों का उचित प्रबन्धन होता है।
3. वास्तविक परिस्थितियों में अध्यापकों और छात्रों को साथ–साथ कार्य करने का अवसर मिलता है।
4. विद्यालयों को सम्पूर्ण विकास का अवसर मिलता है।
5. स्थानीय समुदाय के लिए टिकाऊ गतिविधियों का मॉडल विकसित किया जा सकता है।

स्थानीय समुदाय, अन्य विद्यालयों, व्यावसायियों का एक तन्त्र स्थापित करने से सम्बन्धित कौशल से परिचय होता है। विद्यालयी पहल के सफलता पूर्ण क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित चरणों की सहायता ली जा सकती है–

विद्यालयी समिति का गठन

इसके द्वारा परियोजना में विद्यालय प्रबन्धन की सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सकता है। सैद्धान्तिक रूप से समिति में छात्र, अध्यापक, गैर–अध्यापन कर्मचारी, विद्यालय प्रबन्धन और अभिभावकों को सम्मिलित होना चाहिए।

पर्यावरणीय समीक्षा

इसके अन्तर्गत विद्यालय के पर्यावरणीय मुद्दों की जाँच शामिल है जिसमें सम्बन्धित क्षेत्रों में सुधार लाया जा सके तथा प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में तत्काल पहल की प्रक्रिया शुरू की जा सके।

कार्य योजना

परियोजनाओं का प्रारूप उनके विशिष्ट उद्देश्यों, उपलब्ध संसाधनों तथा क्रियान्वयन की प्रक्रिया, समय–सीमा, विद्यालय प्रबन्धन आदि को ध्यान में रखते हुए तथा माता–पिता के सहयोग से तैयार की जा सकती है।

पर्यवेक्षण तथा मूल्यांकन

परियोजना का नियमित पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन, पर्यावरण के लिए हितकर गतिविधियों के प्रति विद्यालय की वचनबद्धताओं को सुनिश्चित करता है।

पाठ्यक्रम रूपरेखा

ऐसी सामग्री उपलब्ध कराना जिससे सम्बन्धित पर्यावरणीय मुद्दों को पाठों में समाहित किया जाये और पाठ्यक्रम को पर्यावरणीय शिक्षा के अनुरूप बनाया जा सके।

सूचना देना और सहभागिता

विद्यालय के आस–पास के समुदायों को इन गतिविधियों में शामिल कर इको स्वयं सेवक (इको वालन्टियर) बनाया जा सकता है। यदि इन परियोजनाओं में विशेषज्ञ भी सम्मिलित होंगे तो छात्रों को वैज्ञानिक कौशल सीखने का अवसर भी प्राप्त होगा।

निष्कर्ष

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधारपर हम कह सकते हैं कि सुस्थिर विकास सभी लोगों के हित के लिए समान अवसर प्रदान करने और साथ–ही–साथ तीन मुख्य परस्पर सम्बन्धित क्षेत्रों, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्य को एक ही समय में संतुलित करने के बारे में है। सुस्थिर विकास की परिकल्पना सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक कारकों से एक–समान व्यवहार रखती है और यह तभी संभव हो सकता है जब विद्यालय अपने छात्रों को पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को सुस्थिर विकास के विषय में अभिप्रेरित करें।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

श्रीवास्तव डॉ. पंकज– पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

भटनागर ए.वी, अनुराग, नीरु, पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ

ओझा शिवकुमार, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, बौद्धिक प्रकाशन देवनगर इलाहाबाद

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, दृष्टि पब्लिकेशन्स, मुखर्जी नगर दिल्ली।

भरुचा इराक, पर्यावरण अध्ययन, ओरियन्ट ब्लैकस्वॉन प्रा. लि., आसफ अली रोड़, नई दिल्ली।

शर्मा डॉ. शिल्पी, वार्ष्णेय श्रीमती संध्या, पर्यावरण शिक्षा, आर लाल बुक डिपो मेरठ।

श्रीवास्तव डॉ. पंकज– पर्यावरण शिक्षा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

Hawking, R E (1989) Encyclopedia of Indian Natural History, Oxford University Press.